IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 8, Issue 1, August 2020
Impact Factor: 4.819

नारी कौशल और आत्मनिर्भरता: एक विश्लेषण

डॉ० कीर्ति शुक्ला

असिस्टेंट प्रोफेसर- संस्कृत

राजकीय महाविद्यालय, मानिकपुर, जनपद- चित्रकूट (उत्तर प्रदेश)

विकसित भारत की कल्पना एक दृष्टिकोण नहीं बल्कि प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति से साकार होती एक वास्तविकता है ।यह उस भारत की बात है जहां कोई पीछे न छूट जाए,जहां आर्थिक विकास समावेशी हो और सभी के लिए अवसर उपलब्ध हो ।उद्यमिता एक मनोवैज्ञानिक क्रिया है इसी कारण यह सृजनात्मक एवं नवाचार का स्रोत मानी जाती है ।उद्यमी व्यक्ति में अनेक प्रवृत्तियां सम्मिलित होती हैं जो अनेक अभिवृत्तियों मानसिक झुकावों पूर्व प्रवृत्तियों व भावनाओं से संचालित होती हैं ।अतः उद्यमीय क्रियाएं प्रारंभिक मानसिक पृष्ठभूमि का ही परिणाम है ,जो व्यक्ति उद्यमी नव- प्रवर्तनों स्वातन्त्रय होगा एवं संप्रभुता श्रेष्ठ कार्यान्वयन व श्रम के प्रति आदर की भावनाओं को महत्व देते हैं उनमें स्वतः ही सर्वनिष्ठा अभिवृत्तियों का विकास हो जाता है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि उद्यमी के विकास में उद्यमी व्यक्तित्व की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा समाप्ति के पश्चात जीविका के दो ही विकल्प होते हैं ---

1) सरकारी सार्वजनिक या निजी क्षेत्र में निर्धारित वेतन पर नौकरी का

2) स्वरोजगार -जिसमें व्यक्ति नए विचारों को ग्रहण करता है उनका परिवर्तन करता है एवं उत्पादन सेवा का कार्य करता है ।ऐसे लोग उद्यमी कहे जाते हैं ।प्रथम विकल्प में संभावनाएं सीमित होती हैं जबकि दूसरे विकल्प के अंतर्गत उपभोक्ता, उत्पादन व आयात के विकल्प तैयार कर ,निर्यात कर, राष्ट्र के कुल उत्पादन में स्वयं उपार्जन से वृद्धि किया जाता है। स्वरोजगार द्वारा उत्पन्न रोजगार के अवसरों में कार्यालयों के वेतन भोगी एवं वृहद औद्योगिक प्रतिष्ठानों के रोजगार

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 8, Issue 1, August 2020
Impact Factor: 4.819

अवसरों की अपेक्षा कम पूंजी का निवेश होता है ।उद्यम मध्यवर्गीय व्यक्तियों को छोटी बचत का निवेश उद्यमीय कार्यों में करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वे लोगों की रचनात्मक शक्ति को उत्पादन ,डिजाइन, निपुणता प्राप्त करने के माध्यम से समाहित कर दिशा प्रदान करते हैं।उद्यमिता, उत्कृष्टता से आर्थिक प्रगति, गरीबी ,रोजगार उन्मूलन ,रोजगार सृजन, नवाचार और समावेशी विकास को बल मिलता है ।

उद्यमिता विकास चक्र -

1. उद्दीपक क्रियाएं 2. सहायक क्रियाएं

- उद्यमिता में प्रशिक्षण
- फंड की प्राप्ति
- उद्यमीय अवसरों का प्रकाशन
- भूमि प्राप्त करना
- तकनीकी व आर्थिक सूचनाओं को मशीन व उपकरण प्राप्त करना पहचान देना
- विपणन सुविधाये उद्यमियों हेतु फोरम का निर्माण प्रबंध सलाह सूचनाओं की सरलता से उपलब्धता सामान्य सुविधाएं ।

भारत जैसे विकासशील देश में बढ़ती जनसंख्या द्रुति आर्थिक विकास में अवरोध उत्पन्न कर रही है क्योंकि बेरोजगारी असंतुलित विकास का एक मुख्य कारण है। बढ़ते हुए वैश्विक अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी दूर करने के उपाय व संभावनाओं के क्षेत्र में परिवर्तन अवश्य संभावित हो गया है ।जिसके लिए रोजगार की रूढ़िवादिता के बजाय नवपरिवर्तित अनुकूलतम रोजगार के लक्ष्य भेदन की आवश्यकता महसूस हो रही है । जिसमें बेरोजगारी को दूर करके नए-नए रोजगार सृजित किये जा सके।

लघु, सूक्ष्म और मध्यम उपक्रम मंत्रालय के 'उद्यमिता कौशल विकास कार्यक्रम' और 'प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम' जैसे भारत सरकार के अनेक अन्य कार्यक्रमों ने भी उद्यमिता के नए क्षेत्रों

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 8, Issue 1, August 2020
Impact Factor: 4.819

की तलाश की है ।ऐसे कार्यक्रमों के साथ सहयोग उद्यमिता के लिए गुणक का काम कर सकता है ।इसके अलावा **'कोई भी पीछे नहीं छूटे** 'के सिद्धांत पर चलते हुए हाशिये पर के समुदायों की महिलाओं, दिव्यांगों ,आदिवासियों और पूर्व सैनिकों जैसे समूहों को भी विकास यात्रा का हिस्सा बनाए जाने की जरूरत है ।वास्तव में हर समूह को एक अलग तरह के हस्तक्षेप की आवश्यकता हो सकती है । किसी भी देश के आर्थिक विकास की प्रक्रिया की चर्चा करते समय निम्न प्रश्नों पर ध्यान देना चाहिए,:-

1) क्या गरीबों के स्तर में कमी हो रही है ?
2) क्या बेरोजगारी का स्तर कम हो रहा है?
3) क्या अर्थव्यवस्था में असमानताएं कम हो रही है?

यदि उत्तर सकारात्मक है तो निश्चय ही अर्थव्यवस्था में आर्थिक विकास हो रहा है ।आज उक्त तीनों प्रश्नों का उत्तर उद्यमिता में ही निहित है।

उद्यमिता हेतु प्रत्येक उद्योग के साथ कुछ खास समस्याएं हो सकती हैं जैसे की पुरानी पड़ चुकी मशीनें, पुरानी तकनीकी, खराब डिजाइन, उत्पादों का बाजार तक ना पहुंच पाना इन पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इन समस्याओं का गहराई से अध्ययन किया जाना चाहिए और आज के समय के अनुसार इन्हें दूर किया जाना चाहिए । यहां महत्वपूर्ण बात यह भी है कि उन उत्पादों के लिए बेहतर विपणन सहायता सुनिश्चित करके उन्हें आकर्षक भी बनाया जाए। ऐसे उत्पादों को एक जगह इकट्ठा करके उन्हें बाजार उपलब्ध कराने के मकसद से सोशल मीडिया, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का लाभ उठाकर बेहतर मुनाफा दिलाया जा सकता है। जिन उद्योगों में पहले से ही इस तरह के प्रयास किए गए हैं वो सफल भी हुए हैं ,वह अब और आगे बढ़ने के लिए तैयार है। ऐसे उद्यमों को आसानी से ऋण उपलब्ध कराकर उचित व्यवसाय विकास योजनाओं और उच्च कुशल संस्थाओं की मदद से कौशल प्रदान करके बेहतर बनाने की आवश्यकता है ।इस संबंध में बहुत सारी अनेक सरकारी योजनाएं हैं -जैसे प्रधानमंत्री मुद्रा योजना ,प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण के अंतर्गत

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 8, Issue 1, August 2020
Impact Factor: 4.819

ऋण से जुड़ी योजनाओं का लाभ उठाया जा सकता है ।क्योंकि तकनीकी बहुत तेजी से विकसित हो रही है इसलिए पहले से ही प्रशिक्षित उम्मीदवारों को पूर्ण प्रशिक्षित करके और उन्हें कुशलता प्रदान करने की आवश्यकता भी है।

व्यक्ति का स्तर ,इनका महत्व विकासशील विश्व में और भी अधिक बढ़ जाता है जहां की अर्थव्यवस्था मुख्यतः ग्रामीण विकास पर आधारित होती है, और उपलब्ध स्रोतों को प्रयोग में लाकर नई वस्तुएं खोजने के लिए उद्यमिता व उद्योग शुरू करने के लिए बहुत से अवसर मौजूद होते हैं ।उद्यमियों द्वारा उद्योग ,व्यवसाय ,और सेवा क्षेत्र में नवीन परावर्तनों और स्थापनाओं से न केवल राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि होती है वरन सामाजिक जीवन स्तर उपलब्ध उत्पादन साधनों का समुचित व सकारात्मक उपयोग मानव संसाधन की रचनात्मक व सृजनात्मक क्षमताओं का विकास भी होता है । उद्यमी पिछड़े क्षेत्रों में उद्योग स्थापित कर संतुलित आर्थिक विकास को भी गति प्रदान करते हैं ।उद्यमी आर्थिक नेतृत्वकर्ता के रूप में न केवल आर्थिक, औद्योगिक गतिविधियों का संचालन करता है बल्कि बेरोजगारी ,निम्न जीवन स्तर ,निम्न प्रति व्यक्ति आय आदि विकराल समस्याओं के निराकरण की सार्थक पहल भी करता है ।आर्थिक विकास में उद्यमी का योगदान निम्न तथ्यों से स्पष्ट है-

- आर्थिक विकास का प्रवर्तक है
- आर्थिक विकास का उत्प्रेरक है
- आर्थिक विकास का कारण आधार है
- औद्योगिक सभ्यता का जनक है
- उद्योग का कप्तान है
- नव प्रवर्तन को प्रोत्साहित करता है
- प्रतियोगिता का जनक है आर्थिक विकास का नेतृत्व करता है

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 8, Issue 1, August 2020
Impact Factor: 4.819

समाजवादी समाज में राज्य स्वयं ही उद्यमकर्ता होता है। अल्पविकसित देशों में भी यही स्थिति है क्योंकि वहां नए उद्यमों से संबंधित जोखिम उठाने वाले वर्ग का अभाव होता है। परंतु उन्नति पूंजीवादी देशों में यह कार्य निजी उद्यमकर्ताओं द्वारा ही किया जाता है ।

उद्यमिता औद्योगिक, आर्थिक व सामाजिक प्रगति का आधार स्तंभ है।

उद्यमिता के सृजनशील विचारों द्वारा ही राष्ट्र की निर्धनता ,बेरोजगारी, निम्न उत्पादकता एवं आर्थिक असमानता का निवारण हो सकता है ।उद्यमिता अग्रणी विकासशील भूमिका निभाती है और आर्थिक प्रगति का अग्रदूत समझी जाती है । अतः स्पष्ट है कि किसी भी राज्य का आर्थिक ,सामाजिक विकास उद्यमिता का ही परिणाम है।

विकसित भारत की कल्पना 'नारी शक्ति' की भूमिका को स्वीकार किए बिना अधूरी है ।विकास का संबंध महिलाओं की प्रगति से है सशक्तिकरण के लिए मिशन शक्ति जैसे कार्यक्रम इसका प्रमाण हैं।

उद्यमिता की प्रमुख **विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—**

1) **जोखिम वहन करना**— उद्यमिता की आधारशिला जोखिम एवं अनिश्चितताओं को वहन करते हुए सफलता पाना है। संसाधनों को नियंत्रित एवं व्यवस्थित ढंग से नियोजित करना उद्यमी का कार्य होता है जिससे उद्यमिता जोखिमपूर्ण नहीं रह जाती है।
2) **नवप्रवर्तन**— नवप्रवर्तनकारी कार्य उद्यमिता है। नये विचारों, तकनीकों का सृजन करना, उद्यमिता में व्यवस्थित नये खोज, ये यन्त्र एवं नये प्रबन्ध व्यवसाय में उद्यमी सफलता प्राप्त करता है।
3) **रचनात्मक क्रिया**— उद्यमिता, उद्यमी को नये-नये विचारों को क्रियान्वित करने के लिए प्रेरित करता है तथा कार्य में गुणवत्ता भी बढ़ती है जिससे व्यावसायिक विकास होता है।
4) **ज्ञान पर आधारित व्यवहार**— ज्ञान एवं अनुभव के आधार पर व्यक्ति में उद्यमी के गुण आते हैं और वह अपने अनुभव तथा ज्ञान से उच्च उपलब्धियाँ प्राप्त करता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 8, Issue 1, August 2020
Impact Factor: 4.819

5) **व्यवसाय अभिप्रेरणा**— उद्यमिता में व्यवसाय करने की प्रवृत्ति निहित रहती है यह उद्यमी को नये उद्योग प्रारम्भ करने को प्रेरणा देता है।

6) **उद्यमिता सिद्धान्तों पर आधारित है**— उद्यमिता निश्चित सिद्धान्तों पर आधारित है। इसके लिये अर्थशास्त्र, कानून, सामाजिक शास्त्र एवं सांख्यिकी का ज्ञान आवश्यक है।

7) **प्रबन्ध उद्यमिता का माध्यम है**— हर व्यावसायिक उपक्रम में निर्णय एवं योजनाओं को क्रियान्वयन का माध्यम प्रबन्ध है। सुव्यवस्थित प्रबन्ध से साहसी व्यवसाय में नये नये परिवर्तन लाता है **उद्यमिता की आवश्यकता** -

1) **सफल इकाइयों की स्थापना**— उद्यमिता से व्यावसायिक इकाइयों को लाभप्रद एवं कुशल बनाया जा सकता है।

2) **नवाचारों को प्रोत्साहन**— उद्यमिता के कारण ही व्यावसायिक नवप्रवर्तन होते हैं। जिसके फलस्वरूप औद्योगिक एवं आर्थिक विकास होता है।

3) **तीव्र आर्थिक विकास**— उद्यमिता से व्यक्ति में उद्यमी भावना का विकास होता है जिससे उद्यमी व्यावसायिक अवसरों की खोज करते हैं और संसाधनों का दोहन करते हैं जिससे औद्योगिक एवं आर्थिक विकास तीव्र गति से होता है।

4) **रोजगार के अवसर**— उद्यमिता के विकास से देश में नये उद्योग स्थापित होते हैं जिससे औद्योगिक क्षेत्र का विकास एवं विस्तार होता है और रोजगार के अवसरों में वृद्धि होती है।

5) **सन्तुलित विकास**— उद्यमी पिछड़े प्रान्तों में उद्योग स्थापित करके न केवल रोजगार प्रदान कर रहे हैं अपितु आर्थिक असमानताओं को भी कम करते हैं।

6) **नवीन बाजारों की खोज एवं विकास**— उद्यमिता नवीन बाजारों की खोज एवं उनका विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नये शिक्षित एवं प्रशिक्षित उद्यमी नये नये बाजारों की खोजते हैं।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 8, Issue 1, August 2020
Impact Factor: 4.819

7) **राजकीय नीतियों का क्रियान्वयन**— उद्यमिता राजकीय नीतियों एवं योजनाओं के क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

विकास के क्रम में इस हेतु महिला उद्यमियों को अनेकानेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है -

1) गतिशीलता की समस्या
2) निर्णय लेने की क्षमता का अभाव
3) भारतीय पुरुषों की दोहरी मानसिकता
4) पूरा समय ना दे पाना
5) घर के सदस्यों का सहयोग न करना
6) वित्त की समस्या
7) कच्चे माल की समस्या
8) बिक्री एवं विपणन की समस्या
9) आत्मविश्वास की समस्या

इन समस्याओं का निवारणार्थ अनेक समाधान या उपाय भी किये जा सकते हैं।---

1) महिला विपणन समितियों का गठन
2) प्रशिक्षण की सुविधा
3) वित्तीय सहायता केंद्रो की स्थापना
4) शिक्षा को बढ़ावा देना
5) स्व सहायता समूह का गठन

आदि ऐसे उपाय हैं जिनके द्वारा महिलाओं के लिए अधिक से अधिक रोजगार के अवसर प्रदान करने में मदद हो सकती है ।साथ ही उद्यमिता को भी बढ़ावा मिलेगा ।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 8, Issue 1, August 2020
Impact Factor: 4.819

अंततः हम कह सकते हैं कि महिला उद्यमशीलता कौशल की पुनर्कल्पना का संयोग आ गया है ।हमें विकसित राष्ट्र बनाने के लिए सही मार्गदर्शन , सही दशा और दिशा की आवश्यकता है जो किसी भी राष्ट्र को उसकी संकल्पनाओं को प्राप्त कराने में सफल हो सकती है।

संदर्भ ग्रंथ-

1. उद्यमिता के मूल आधार -अग्रवाल और मिश्रा
2. आर्थिक विकास एवं नियोजन -एमपी सिंह
3. प्रतियोगिता दर्पण और योजना के विभिन्न संस्करण
4. आर्थिक विकास एवं नीति --मिश्रा एवं पुरी .